शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक ११ : नई दिल्ली : ९-१५ जून २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां कोलकाता महानगर के परिपार्श्ववर्ती क्षेत्रों में विहरण करते हुए हावड़ा पधार गए हैं। कोलकाता महानगर और उसके पार्श्ववर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालुओं में आचार्यप्रवर के पदार्पण से अतिशय उल्लासमय वातावरण है। प्रायः प्रतिदिन दिन भर में हजारों श्रद्धालु आचार्यप्रवर के दर्शन कर लेते हैं। पूज्यप्रवर के विहार के दौरान श्रद्धालु पुरुष वर्ग की विराट उपस्थिति अनायास भव्य जुलूस का दृश्य उपस्थित कर देती है। प्रातः चार बजे से रात्रि नौ बजे तक आचार्यप्रवर के प्रवास स्थल में भक्तों का मेला-सा लगा रहता है।

परम पूज्य आचार्यप्रवर कोलकाता महानगर में

अभागी नहीं, त्यागी बनें

२७ मई। परम पावन आचार्यप्रवर प्रातः वर्धमान से कान्दासोना की ओर प्रस्थित हुए। विहार के दौरान श्रद्धालुओं के अनुरोध पर आचार्यप्रवर कुछ चक्कर लेकर 'उल्लास' नामक स्थान में पधारे और वहां एक श्रद्धालु परिवार के नवीन घर के बाहर कुछ क्षण आसीन हुए। आचार्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात वह परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था। पूज्यप्रवर करीब ११.२ किमी का विहार कर कान्दासोना स्थित मैग्नेस ग्लोबल स्कूल में पधारे। आज सायंकाल तक प्रवास यहीं हुआ। आचार्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात विद्यालय से संबद्ध श्री मूलचंद कोठारी परिवार तथा श्री रायचंद सुराणा परिवार अतिशय आह्लादित थे।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जिसके पास भोग्य सामग्री है, वह वैराग्य भावना से उसके उपयोग का संयम करे तो वह त्याग है। अभाव की अवस्था में विवशतावश भोग न करने वाला अभागी तो हो सकता है, त्यागी नहीं हो सकता। कहा गया है कि राग के समान दुःख और त्याग के समान सुख नहीं है। प्राप्त भोग्य सामग्री को वैराग्य भावना से छोड़ देना त्याग होता है।

स्वयं सक्षम होते हुए भी अपने दुश्मन को क्षमा करना त्याग होता है। राजघराने में रहने वाला एक व्यक्ति वैराग्यपूर्वक कंटकाकीर्ण पथ पर चलने लगे, वह कितनी बड़ी बात होती है। आदमी को अपने जीवन में त्याग के विकास का प्रयत्न करना चाहिए। पदार्थों के मोह को कम करने का प्रयास करना चाहिए तथा हर क्रिया में संयम रखने की चेष्टा करनी चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने विद्यालय से संबद्ध लोगों को संबोधित करते हुए कहा--'विद्यालय में भूगोल, खगोल आदि विषयों का अध्ययन चलता होगा। उसके साथ संभव हो तो 'जैनिज्म' का अध्ययन भी यहां होना चाहिए। यहां विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ सत्संस्कार भी प्राप्त हों। इस प्रकार विद्यालय में आध्यात्मिकता का पुट रहे। 'जैन एजुकेशन ट्रस्ट' नाम है तो यहां पढ़ने वाले बच्चों को वास्तव में जैन एजुकेशन भी मिले।'

श्रीमती प्रीति कोठारी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में गीत का संगान किया। जैन एजुकेशन ट्रस्ट की ओर से श्रीमती प्रतिभा कोठारी, श्रीमती सोनिया सुराणा, मैग्नेस ग्लोबल स्कूल के सीईओ श्री राजेश सुराणा, श्री तरुण सेठिया, सुश्री भाग्यश्री छाजेड़, सुश्री गीतिका बांठिया, श्रीमती स्मिता भूतोड़िया और वर्धमान तेरापंथ

महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती शशिदेवी कोठारी ने आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी अभिव्यक्ति दी। श्रीमती विमला पुगलिया और श्रीमती रीता सेठिया ने स्वागत गीत को प्रस्तुति दी।

मध्याह्न में बंग्ला फिल्म के अभिनेता तथा तृणमूल कांग्रेस के युवा विभाग के उपाध्यक्ष श्री हीरोन चट्टोपाध्याय ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन मार्गदर्शन प्राप्त किया।

पूज्यप्रवर का आगामी कल का गंतव्य स्थल सोलह किमी से ज्यादा दूरी पर स्थित था, इसलिए आचार्यप्रवर ने चिंतनपूर्वक आज शाम को कुछ किमी विहार करने का निर्णय लिया और सायंकाल सूर्यास्त से कुछ समय पूर्व विद्यालय से प्रस्थान किया। मार्गवर्ती भाभरा और शक्तिगढ़ के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। पूज्यप्रवर का प्रायः विहार प्रातःकालीन ही होता है, इस कारण सायंकाल राष्ट्रीय राजमार्ग का नजारा कुछ बदला-बदला नजर आ रहा था। वाहनों का आवागमन बढ़ा हुआ था। मार्ग के परिपार्श्व में स्थित रेस्टोरेंट आदि में भी व्यस्तता दिखाई दे रही थी और उनमें स्थित लोगों की संख्या भी वृद्धिंगत दिखाई दे रही थी। 'लंचा' नामक खाद्य पदार्थ बहुलतया दिखाई दे रहा था। प्रायः हर होटल और रेस्टोरेंट के नाम के साथ जुड़ा 'लंचा' शब्द उसके प्रति राहगीरों के आकर्षण को दर्शा रहा था। करीब २.० किमी का विहार कर आचार्यप्रवर शक्तिगढ़ स्थित पार्थ सारथि होटल एण्ड रेस्टोरेंट में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

तब तक कर लो सेवाधर्म

२८ मई। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः शक्तिगढ़ से अझापुर की ओर प्रस्थान किया। शक्तिगढ़ के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। आज प्रखर आतप लिए सूर्य सम्मुखीन बना हुआ था। इसके साथ हवा की अनुपस्थिति में उमस आग में घी का कार्य कर रही थी। जन-जन का आतप हरने के लिए यात्रायित आचार्यप्रवर पसीने से तर-बतर तन और प्रखर आतप की परवाह किए बिना निरंतर गतिमान थे और मानों अपनी स्वेद बूंदों के रूप में इस पृथ्वी पर अमृत बरसा रहे थे। रविवार होने के कारण कोलकातावासी बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के विहार में पैदल चल रहे थे। कोलकाता की क्रमशः निकटता कोलकातावासी श्रद्धालुओं के उल्लास को क्रमशः वृद्धिंगत करती जा रही थी। १५.१ किमी का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर अझापुर उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी को तब तक सेवाधर्म कर लेना चाहिए, जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, बीमारी न बढ़ जाए और इन्द्रिय शक्ति क्षीण न हो जाए। पुरुषार्थरूप सेवा कार्य केवल भावना से संभव नहीं होता, उसके लिए शारीरिक सामर्थ्य भी अपेक्षित होता है। इसलिए शारीरिक सक्षमता की स्थिति में यथासंभव यथौचित्य सेवाधर्म कर लेना चाहिए। वृद्धावस्था में कानों से कम सुनाई देने लग सकता है, बाल सफेद हो सकते हैं, आंखों की रोशनी कम हो सकती है, हाथ कांपने लग सकते हैं, पांव में दर्द हो सकता है और दांत गिर सकते हैं। ऐसी स्थिति में सेवाधर्म कैसे हो सकता है। शरीर व्याधियों का घर है। इसमें कब, कौन-सी व्याधि उभर जाए, कहना कुछ कठिन है। व्याधि उभरने के बाद सेवाधर्म करना कठिन हो सकता है। इसलिए आदमी को शारीरिक स्वस्थता की स्थिति में सेवाधर्म कर लेना चाहिए। आदमी को यथासंभव यथौचित्य अपना कार्य दूसरों के भरोसे न ही छोड़ना चाहिए और दूसरों की यथासंभव आध्यात्मिक सेवा करनी चाहिए। आदमी शारीरिक सामर्थ्य की स्थिति में सेवाधर्म की आराधना कर अपने जीवन को सफल बना सकता है।'

पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान कर समुपस्थित ग्रामवासियों को संकल्पत्रयी स्वीकार करने का आह्वान किया तो ग्रामीण उस हेतु समुद्यत हो गए। आचार्यप्रवर द्वारा उच्चरित शब्दावली को दोहराकर ग्रामीणों ने तीनों संकल्प ग्रहण किए।

आज दिन रात में सैंकड़ों बंगाली लोगों को आचार्यप्रवर के दर्शन और यथावसर आशीष प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लोग पूज्यप्रवर की त्याग-तपस्यामय जीवनशैली के विषय में जानकारी प्राप्त कर आश्चर्यचकित और भावाभिभूत बने हुए थे। प्रवास स्थल में आज 'सर्प जाति' के दो प्राणी दिखाई दिए। सायंकालीन गुरुवन्दना के आसपास आचार्यप्रवर ने मुनिवृंद को सजग रहने की प्रेरणा प्रदान की।

दिन भर उमस भरी गर्मी से युक्त रहने वाला मौसम सायंकाल कुछ बदला। आकाश मेघाच्छादित हो गया, ठंडी हवा बहने लगी और हल्की बूंदाबांदी भी हुई। मौसम की प्रतिकूलता के बावजूद रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी ग्रामीणों की अच्छी उपस्थिति रही। लोग आचार्यप्रवर के दर्शन कर धन्यता का अनुभव कर रहे थे।

आसक्ति छोड़ो, दुःख दूर होगा

२६ मई। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः अझापुर से जमालपुर के लिए प्रस्थान किया। यत्र-तत्र ग्राम्यजन पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। बंगाली महिलाएं अपने-अपने घरों के बाहर स्वतः स्फूर्त प्रेरणा से शंखध्वनि और उललूकनाद कर पूज्यचरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित कर रही थीं। मासाग्राम, जमालपुर, चोगड़िया पुल (गांव) और कृष्णानगर के सैंकड़ों-सैंकड़ों ग्राम्यजनों ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। चोगड़िया पुल गांव में मार्ग के परिपार्श्वस्थ नहर के किनारे लगी आम्रवृक्ष की कतार नयनाभिराम दृश्य उत्पन्न कर रही थी। पूज्यप्रवर तारकेश्वर पधारने के लिए आज राष्ट्रीय राजमार्ग को छोड़ भीतरी मार्ग में पधारे। यह मार्ग अपेक्षाकृत संकरा भले हो, किन्तु प्राकृतिक सुषमा लिए हुए था। मार्ग के दोनों ओर स्थित सघन वृक्ष राहगीरों पर शीतल छाया कर रहे थे। इस कारण आतप से काफी राहत मिल रही थी, किन्तु हवा के प्रवाह के अभाव में उमस भरा मौसम शरीर को पसीने से नहला रहा था। लगभग १०.५ किमी का विहार कर पूज्यप्रवर जमालपुर में स्थित सेठिया कोल्ड स्टोरेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। अपने आराध्य का एक दिवसीय प्रवास अपने आंगन में पाकर सरदारशहर का श्री सोहनलाल मोहनलाल सेठिया परिवार अतिशय हर्षविभोर था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम पावन आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का वक्तव्य हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कोलकातावासियों से आचार्यप्रवर के कोलकाता प्रवास का पूरा लाभ उठाने का आह्वान किया।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में राग चलता है। राग है तो द्वेष को भी आने और उभरने का मौका मिल सकता है। राग-द्वेष के कारण ही आदमी के पापकर्म का बंधन होता है। दुनिया में दुःख भी है। कितने-कितने प्राणी दुःखी हैं। दुःख का मूल कारण आसक्ति है, राग है। निमित्त कारण दूसरे हो सकते हैं। दुःख मुक्त होने के लिए आसक्ति/राग पर प्रहार करना चाहिए।

इन्द्रियां ज्ञान की माध्यम हैं। इनसे भोग भी भोगा जा सकता है। आदमी इन्द्रिय विषयों में आसक्ति कर दुःखी बन जाता है। इसलिए आदमी को इन्द्रिय संयम करना चाहिए। ज्यों-ज्यों इन्द्रिय विषयों में

आसक्ति कम होगी, त्यों-त्यों दुःख भी कम हो सकेगा। साधना के द्वारा दुःखमुक्त अर्थात् परम सुखी बना जा सकता है।' पूज्यप्रवर की प्रेरणा से कोल्ड स्टोरेज से जुड़े लोगों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प ग्रहण किए।

श्री सोहनलाल सेठिया, श्रीमती पुष्पा सेठिया और श्रीमती अभिलाषा सेठिया ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। सेठिया परिवार की ओर से स्वागत गीत का संगान किया गया। समणी सौम्यप्रज्ञाजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

सेठिया कोल्ड स्टोरेज के आसपास स्थित विभिन्न व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में कार्यरत अथवा आसपास रहने वाले सैंकड़ों लोग आज पूज्यप्रवर के दर्शन और यथावसर पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

चार बातें मंजिल पाने के लिए

३० मई। आज प्रातःकाल से आसमान में बादल छाए हुए थे। हल्की बूंदाबांदी भी हुई, किन्तु वह सूर्योदय के आसपास थम गई। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः जमालपुर से दशघरा की ओर प्रस्थित हुए। मार्गस्थ घरों के लोग अपने-अपने घरों के बाहर पूज्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़े थे। कई घरों के बाहर महिलाएं शंखनाद कर अपने मंगलभाव श्रीचरणों अर्पित कर रही थीं। आचार्यप्रवर ने आज वर्धमान जिले की सीमा को अतिक्रान्त कर हुगली जिले की सीमा में प्रवेश किया। सुराखाल्ना, इलम बाजार, माधवपुर और दशघरा के ग्राम्यजनों ने मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। मार्ग के परिपार्श्वस्थ खेतों में लगे तुरई, खीरा, करेला, मूली आदि के ढेर कृषकों के पुरुषार्थ को बयां कर रहे थे। दशघरा के कई घरों के बाहर महिलाएं शंखनाद कर आचार्यप्रवर का अभिनन्दन कर रही थीं। करीब १४.७ किमी का विहार कर पूज्यप्रवर दशघरा बालिका उच्च विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'वीतराग कभी भी गलत रास्ता नहीं बताते। चार चीजे हैं--लक्ष्य, मार्ग, मार्गदर्शक और गति। सबसे पहली बात है कि आदमी का लक्ष्य अच्छा रहना चाहिए। अध्यात्म के संदर्भ में अंतिम लक्ष्य मोक्ष होता है। मोक्ष का मार्ग कौन-सा है, यह बताने वाला कोई होना चाहिए। अध्यात्म के क्षेत्र में मार्गदर्शक गुरु होते हैं। मार्गदर्शक चक्षुष्मान, प्रज्ञावान, ज्ञानवान, योग्य, संयमी और त्यागी हो तो वह अच्छा मार्गदर्शन कर सकता है। चौथी बात है--गति। हम चलेंगे तो मंजिल मिल सकती है। गति तीव्र है या मंद, यह बाद की बात है। पहली बात है-गति हो रही है या नहीं। मार्गदर्शक रास्ता बता दे, उसके बाद भी उस पर चलने से ही मंजिल मिल सकेगी।'

आज सायंकाल आकाश में बादल छा गए। हल्की बूंदाबांदी भी हुई। ठंडी बयार आसपास में तेज वर्षा का संकेत लिए हुए थी। बताया गया कि तारकेश्वर आदि निकटस्थ क्षेत्रों में काफी तेज वर्षा हुई है। आज भी दिन-रात्रि में सैंकड़ों ग्रामीणजनों को पूज्यप्रवर के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सायंकाल वर्धमान स्थित क्रिश्चियन मिशनरी सोसायटी स्कूल के सहायक शिक्षक श्री आशित कुमार कुंडु पूज्यप्रवर को भेंट करने की भावना से एक थैली में आम भरकर लेकर आए। उन्हें साधुचर्या की अवगति दी गई।

तारणहार गुरुवर तारकेश्वर में

३१ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः दशघरा से तारकेश्वर की ओर प्रस्थान किया। आज

प्रातःकाल ही कोलकाता के सैंकड़ों लोग पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हो गए। तारकेश्वर की सन्निकटता के साथ यह संख्या भी बढ़ती गई। गत रात्रि में हुई वर्षा से भूमि आर्द्र अवश्य दिखाई दे रही थी, किन्तु प्रखर उमस के कारण यह अनुमान लगाना कठिन था कि यहां कुछ घंटों पूर्व वातावरण को शीतल बनाने वाले मेघ बरसे थे। उमस के कारण निकलने वाला पसीना वर्षा की भांति शरीर और कपड़ों को आर्द्र बना रहा था। गोपीनगर के ग्राम्यजन आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए।

जन-जन के तारणहार आचार्यप्रवर का तारकेश्वर पदार्पण शिव से संबंधित इस नगर की भक्ति को और अधिक मुखर बना रहा था। तारकेश्वर नगर तारकनाथ मंदिर के कारण प्रसिद्धि को प्राप्त है। तारकनाथ मंदिर शिवभक्तों के लिए श्रद्धा का स्थान बना हुआ है। सन् १७२६ में राजा भारमल्ल द्वारा निर्मित यह मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में एक है। बताया गया कि प्रतिवर्ष श्रावण माह में यहां लाखों लोग पहुंचते हैं। हजारों लोग कांवड़ लेकर यहां आते हैं और जलाभिषेक करते हैं। प्रति सोमवार भी यहां जनता उमड़ती है।

पूज्यप्रवर के पदार्पण से तारकेश्वर तेरापंथ समाज का उल्लास चरम पर था। अन्य जैन एवं जैनेतर समाज में भी उत्साहपूर्ण वातावरण था। तारकेश्वर नगरपालिका के अध्यक्ष श्री सरपंच सामंतो ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। कोलकाता के भी हजारों लोग आज आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित थे। इस कारण मानों वातावरण महाश्रमणमय बना हुआ था। लगभग १०.१ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर तारकेश्वर स्थित कल्पतरु कोल्ड स्टोरेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी को रात्रि में आत्मसंप्रेक्षा करनी चाहिए। अपने आपको देखने के कुछ सूत्र हो सकते हैं--मैंने अब तक अपने जीवन में क्या किया? अपनी आत्मा के कल्याण के लिए क्या किया? धार्मिक दृष्टि से कुछ नियम स्वीकार किए या नहीं? कर्त्तव्य निर्वहन अच्छी तरह किया या नहीं? कौन-सा कार्य अभी तक अवशेष की सूची में है? कौन-सा कार्य मेरे द्वारा करना शक्य है, किन्तु मैं नहीं कर रहा हूं? यह विश्लेषण एक दिन का भी किया जा सकता है और लंबे काल का भी किया जा सकता है। आदमी को उल्टे क्रम से अपने अतीत की संप्रेक्षा और समीक्षा करनी चाहिए। इस प्रकार संप्रेक्षण और समीक्षा से जीवन में परिष्कार हो सकता है।

आदमी के जीवन में कर्त्तव्य निष्ठा का महत्त्व होता है। कर्त्तव्य क्या है, यह गौण बात है, कर्त्तव्य निर्वहन में जागरूकता महत्त्वपूर्ण होती है। कर्त्तव्य के प्रति लापरवाही अच्छी बात नहीं होती। सफल व्यक्ति वह होता है जो अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहते हुए उसका सम्यक निर्वहन करता है।' आचार्यप्रवर की प्रेरणा से तारकेश्वरवासियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार किए।

करीब नौ साल बाद गुरु सन्निधि में पहुंचने वाली और आचार्यप्रवर के पदाभिषेक के बाद प्रथम दर्शन करने वाली साध्वी संगीतश्रीजी ने अपनी आंतरिक प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी तथा अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'साध्वी संगीतश्रीजी का सिंघाड़ा इस रूप में पहली बार पहुंचा है। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के आकस्मिक महाप्रयाण के बाद काफी साध्वियों से मिल चुका हूं। अभी भी कुछ साध्वियां अवशिष्ट होगीं, उन अवशिष्ट साध्वियों में एक साध्वी संगीतश्रीजी का सिंघाड़ा था। अब इन साध्वियों से भी मिलना हो गया है। ये लंबी यात्रा कर पहुंची हैं। साध्वियों के स्वास्थ्य

में दिक्कतें पैदा हो गई थीं, खूब मनोबल रहे, अध्यात्म का बल रहे, सब ठीक रहे। ये साध्वी जतनकुमारीजी (राजलदेसर) के साथ रही हुई साध्वियां हैं। सभी खूब अच्छा काम करें।'

तारकेश्वर तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री निर्मल डाकलिया, श्री सुरेन्द्र डाकलिया ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। सुश्री मेघा डाकलिया तथा श्रीमती श्वेता डाकलिया ने कवितापाठ कर आचार्यश्री की अभ्यर्थना की। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। कोलकाता महानगर की विभिन्न ज्ञानशालाओं से संबद्ध ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में गीत को प्रस्तुति दी।

दिन भर पसीने से नहलाने वाली उमस सायंकाल आसमान में छाए बादलों और ठंडी हवा के तेज प्रवाह से शांत हुई। कृष्णवर्णी सघन बादल तेज वर्षा की संभावना भी लिए हुए थे, किन्तु तेज हवा उन्हें उड़ा कर ले गई। तारकेश्वर में मात्र हल्की बूंदाबांदी हुई।

पूज्यप्रवर का दो प्रशासनिक अधिकारियों से वार्तालाप

आज सायंकाल पश्चिम बंगाल के वेस्टर्न जोन के आईजी श्री राजीव मिश्रा तथा हुगली जिला के एसपी श्री सुकेश कुमार जैन पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर का उनके साथ वार्तालाप का लंबा क्रम चला। इस दौरान आचार्यप्रवर ने उनकी जिज्ञासाओं और व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान भी प्रदान किए। आचार्यप्रवर ने उनकी जिज्ञासाओं पर साधना के कुछ गहरे सूत्र भी समझाए। आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त समाधानों से मिलने वाली संतुष्टि उनकी भाव-भंगिमा पर स्पष्ट झलक रही थी। प्रस्तुत है वार्तालाप के कतिपय अंश--

एसपी--'आप लोग अहिंसा के लिए पैदल चलते हैं, किन्तु अहिंसा के लिए अनाश्वयक इतना श्रम क्यों? सृष्टि के जीव तो मरने के लिए ही होते हैं।

आचार्यप्रवर-- 'अहिंसा की साधना ही मोक्ष की साधना है। आपके अनुसार जीव मरने के लिए तो होते होंगे, परन्तु मारने के लिए तो नहीं होते? ऐसा होगा तो आदमी आदमी को मारने लग जाएगा, अपराध बढ़ जाएंगे। इसलिए हम पैदल चलकर हिंसा से अपने आपको बचाने का प्रयत्न करते हैं।'

एसपी-- 'प्राचीन समय में तो वायुयान, वाहन आदि सुविधाएं नहीं थीं, परन्तु आज के समय में इन चीजों का उपयोग किया जाए तो आपके उपदेश जन-जन तक पहुंच सकेंगे।

आचार्यप्रवर--'अगर हम वायुयान से यात्रा करते तो आज तारकेश्वर जैसी जगह कैसे आ पाते? दिल्ली से सीधा कोलकाता ही पहुंचते। फिर ग्रामीण क्षेत्रों को लाभ कैसे मिलता? पैदल चलने से ग्रामीणजनों को भी लाभ मिल जाता है।'

आईजी--'ध्यान-साधना के क्षेत्र में आगे कैसे बढ़ें? कौन-सा ध्यान करना चाहिए?'

आचार्यप्रवर--'ध्यान, साधना का एक प्रयोग आपको बताया जा रहा है। दर्शनकेन्द्र (भृकुटि का मध्य भाग) पर बालसूर्य का ध्यान करें, वहां अरुण रंग का साक्षात्कार करें और मन ही मन 'णमो सिद्धाणं' का जप करें।'

आईजी--'आप जिसे दर्शनकेन्द्र कह रहे हैं, हमारे यहां उसे 'आज्ञाचक्र' कहा जाता है, क्या आज्ञाचक्र या ध्यान करने मात्र से परिपूर्ण साधना हो सकती है?'

आचार्यप्रवर--'साधना के अनेक प्रयोग हैं। चूंकि आप व्यस्त रहते होंगे, इसलिए मैंने आपकी स्थिति को देखते हुए यह छोटा-सा प्रयोग बताया है।'

आईजी--'एक सामान्य साधक को साधना में कितना समय लगाना चाहिए?

आचार्यप्रवर--'आपके लिए प्रारंभ में बीस-पच्चीस मिनिट का प्रयोग काफी है, ताकि व्यस्तता के बीच भी आपके लिए साधना करने में आसानी रहे।'

आईजी--'जो साधक हर हाल में सिद्धि चाहता है या यों कहूं कि साधना के क्षेत्र में आर-पार की लड़ाई लड़ना चाहता है, उसे कितना समय साधना में लगाना चाहिए?'

आचार्यप्रवर--'ऐसी स्थिति में तो उसे अपना पूरा जीवन साधना में समर्पित कर देना चाहिए और प्रतिदिन कम से कम आठ-नौ घंटे साधना में नियोजित करने चाहिए।'

आईजी--'आठ-नौ घंटे तो एक साथ बैठना कठिन हो सकता है।'

आचार्यप्रवर--'प्रारम्भ में एक साथ आठ-नौ घंटे बैठना संभव न हो तो बीच-बीच में कुछ विश्राम किया जा सकता है। उससे पहले कुछ विस्तार से प्रशिक्षण ले लेना चाहिए। हमारे यहां प्रेक्षाध्यान के शिविर लगते हैं, उनमें आठ दिनों तक ध्यान आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। शिविर में प्रशिक्षण लेने के बाद उस साधना को निरंतर किया जा सकता है। ध्यान के साथ कुछ अच्छे ग्रंथों का अध्ययन भी करना चाहिए। जैसे आपके यहां भगवद्गीता है। उसमें भी ज्ञान की बहुत अच्छी बाते हैं। ज्ञान होने से साधना में भी सहायता मिल सकती है। इस प्रकार ज्ञान और ध्यान दोनों होने चाहिए।'

एसपी--'अनुकूल और प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में मन विचलित न हो, इसके लिए क्या करना चाहिए?'

आचार्यप्रवर--'आप तो जैन हैं, जब भी मन में विचलन की स्थिति हो, नमस्कार महामंत्र का पाठ कर लिया करें।'

एसपी--'आचार्यश्री! जब भी समय मिलता है, मैं नमस्कार महामंत्र का पाठ करता रहता हूं, इससे मुझे काफी अच्छा लगता है।'

आचार्यप्रवर--'जप भी अच्छा है, इसके साथ कुछ ध्यान का प्रयोग किया जा सकता है। कायोत्सर्ग का प्रयोग इस दृष्टि से उपयोगी हो सकता है। जीवन में अनुकूल-प्रतिकूल स्थितियां आ सकती हैं, आदमी उनमें उलझे क्यों? मान लो, आपको बहुत बड़ा पद मिल गया तो यह सोचना चाहिए कि मुझे तो सेवा करनी है। उस समय भी ज्यादा खुशी नहीं होनी चाहिए। कोई प्रतिकूलता आ जाए तो उसका समुचित समाधान खोजा जा सकता है, किन्तु मन को दुःखी नहीं बनाना चाहिए। मन को समझाने से भी विचलन की स्थिति में अंतर आ सकता है। इसके साथ अच्छे ग्रंथों का अध्ययन भी करना चाहिए, उन्हें पढ़ने से विचारों की खुराक प्राप्त हो सकती है, जो विभिन्न परिस्थितियों में मन को विचलन से बचा सकती है।'

आईजी--'आचार्यश्री! एक बात बताइए, आप इतने लोगों से घिरे रहते हैं, इतने शिष्यों को संभालते हैं, यदि आप इन सबसे मुक्त रहें तो क्या आपकी साधना और अच्छी तरह नहीं होगी?'

आचार्यप्रवर--'यदि मैं अकेला साधना करूं तो मेरी साधना तो मैं कर सकूंगा, किन्तु (संतों की ओर संकेत करते हुए) इनका मार्गदर्शन कौन करेगा?'

आईजी--'ऊपर वाला संभालेगा।'

आचार्यप्रवर--'हम आपसे यह प्रश्न कर लें कि यदि ऊपर वाले को ही सब कुछ संभालना है तो आप यह प्रशासनिक कार्य क्यों संभाल रहे हैं?'

आईजी--'हम तो माध्यम हैं।'

आचार्यप्रवर--'जैसे आप माध्यम हैं, वैसे ही हमें जान लें। इसीलिए ग्रंथ हैं, पंथ हैं और संत हैं कि इन

माध्यमों से ज्ञान मिलता रहे। आखिर कोई संभालने वाला नहीं होगा तो नियंत्रण कौन करेगा? इसलिए कहीं-कहीं अपनी साधना थोड़ी गौण करके भी दूसरों का भला करने का प्रयास करना चाहिए।'

आईजी--'आचार्यश्री! आप से मिलकर हमें बहुत अच्छा लगा। आपने हमारी जिज्ञासाओं के सटीक समाधान दिए। मैं आपकी बातों से सहमत हूं, संतुष्ट हूं। मैं समय निकालकर पुनः कोलकाता में जरूर आऊंगा।'

एसपी--'आपने जो मार्गदर्शन दिया है, वह मेरे लिए बहुत उपयोगी होगा। चतुर्मास के दौरान मैं भी पुनः आपके दर्शन अवश्य करूंगा।'

गलती का पुनरावर्तन न करें

१ जून। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः तारकेश्वर से हामीरागाछी के लिए प्रस्थान किया। तारकेश्वर के अनेक श्रद्धालु परिवारों ने अपने-अपने घरों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ का श्रवण किया। तारकनाथ मंदिर की ओर जाने वाले मार्ग के निकट लोगों ने मंदिर के विषय में पूज्यप्रवर के समक्ष अवगति प्रस्तुत की। कोलकाता ज्यों-ज्यों निकट होता जा रहा है, उमस भी मानों बढ़ती जा रही है। प्रायः दिन भर रहने वाली उमस के कारण शरीर से पसीना रिसता रहता है। दिन में कई-कई बार पसीने से गीले हुए कपड़े निचोड़ने पड़ जाते हैं, और कई बार तो तेज हवा में भी नमी के कारण पसीना आता रहता है। यद्यपि आज के विहार के दौरान काफी देर तक बादलों ने सूर्य को ढक रखा था, किन्तु उमस के सामने मानों सब बेबस थे। पूज्यप्रवर मौसम की प्रतिकूलता में भी निर्विशेष भाव से गतिमान थे।

यदा-कदा होने वाली वर्षा और नमी के कारण इस क्षेत्र में हरियाली के आसपास कई लटें आदि जीव उत्पन्न हो जाते हैं। कई जीव सड़क पर भी हलन-चलन करते दिखाई देते हैं। आचार्यप्रवर पीछे आ रहे संतों को सजग करने हेतु उन विकलेन्द्रिय जीवों के निकट एक-एक संत को खड़ा कर देते हैं। पूज्यप्रवर की यह जागरूकता गृहस्थों में स्वतः प्रेरणा भरती है और सेवा करने वाले कई गृहस्थ भी नीचे देख-देखकर चलते हैं।

आचार्यप्रवर करीब १५.७ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति द्वारा निर्मित स्थान में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। सेवा समिति से संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। तारकपीठ की ओर जाने वाले कावड़ियों के लिए यह स्थान विश्राम स्थल के रूप में प्रतिष्ठित है।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने प्रवचन में कहा--'साधु या सामान्य गृहस्थ से भी कभी-कभी जानकर या अनजाने में अनाचरणीय कार्य हो जाए तो तत्काल उससे निवृत्त हो जाना चाहिए और जो अतिक्रमण हो गया, उसकी दुबारा आवृत्ति न हो, ऐसा भाव मन में पुष्ट रहना चाहिए। आदमी से एक बार गलती हो जाए तो वह यह सोचे कि मैं वह कार्य अब नहीं करूंगा, जो मैंने पूर्व में प्रमादवश कर लिया है। इंसान एक ऐसा प्राणी है जो साधना करके वीतरागता को भी प्राप्त कर सकता है। वीतराग बन जाने के बाद कोई गलती उसके द्वारा हो ही नहीं सकती है, किन्तु अवीतराग अवस्था में गृहस्थ से ही नहीं, एक भूमिका तक साधु के द्वारा भी गलती हो सकती है। जैन आगम साहित्य में निशीथ सूत्र में यह निर्देश है कि कौन-सी गलती होने पर क्या प्रायश्चित्त आता है? वह एक

विशुद्धीकरण का शास्त्र है। आयारचूला में साधु का आचार-विधान बताया गया है तो अतिक्रमण होने पर संशोधन-विशोधन का उपाय निशीथ में उपलब्ध होता है।

न्यायपालिका अपराधी को दंडित करती है। उसके पीछे उद्देश्य यह हो सकता है कि वह स्वयं आगे अपराध न करे और दूसरों को भी प्रेरणा मिले कि अपराध करने का यह फल मिलता है, ताकि वे अपराध में न जाएं। जिस राष्ट्र में सामान्य भूमिका के लोग रहते हैं, वहां न्यायपालिका की आवश्यकता होती है। केवल लोकतंत्र में ही नहीं, राजतंत्र में भी न्याय का होना आवश्यक है। सज्जनों की रक्षा करना राजा का कर्त्तव्य होता है तो दुर्जनों पर अनुशासन करना भी राजा का कर्त्तव्य होता है। धर्म संगठन में भी प्रायश्चित्त विधि अपेक्षित होती है, ताकि गलती करने वाले का शोधन हो सके और दूसरों को प्रेरणा मिल सके।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आदमी से गलती हो सकती है। कानून व्यवस्था का अतिक्रमण हो सकता है। लोकतंत्र में कार्यपालिका है, न्यायपालिका है और विधायिका भी है। यदि आदमी कोई गलती ही न करे तो न्यायपालिका की अपेक्षा क्यों और कितनी पड़ेगी? चूंकि आदमी गलती कर लेता है, इसलिए न्यायपालिका की आवश्यकता हो जाती है। गलती हो और उसके दंड का विधान न हो तो अपराध बहुत ज्यादा बढ़ सकते हैं। सजा देना भी न्यायाधीश का धर्म होता है। कोई जैन श्रावक न्यायाधीश बने और वह यह सोचे कि जैन श्रावक होने के नाते मैं किसी को सजा कैसे दे सकता हूं तो उसके कर्त्तव्य के सम्यक् निर्वहन में दिक्कत हो सकती है। यदि वह न्यायाधीश है तो समुचित सजा देना उसका कर्त्तव्य होता है। न्यायाधीश के रूप में जैन श्रावक न्याय के आधार पर बड़ी से बड़ी सजा भी सुना दे तो वह जैन श्रावकत्व से च्युत नहीं होता। और तो क्या जैन श्रावक युद्ध में चला जाए और देश की रक्षा के लिए युद्ध में शत्रुओं को ढेर भी कर दे तो भी वह जैन श्रावक ही कहलाएगा क्योंकि उसने अपना कर्त्तव्यनिर्वहन किया है। आवेश और लोभ समुत्पन्न संकल्प के कारण किसी आदमी को मार देना जैन श्रावक के लिए सर्वथा त्याज्य है। लेकिन अपने राष्ट्र, समाज, परिवार और स्वयं की रक्षा के लिए होने वाली हिंसा प्रतिरक्षात्मिकी है। इस हिंसा से जैन श्रावकत्व में गिरावट वाली बात प्रतीत नहीं होती।

जिन्दगी में कभी-कभी गलती हो सकती है, किन्तु उसे दोहराना नहीं चाहिए। उसको भयावश छुपाना भी नहीं चाहिए। यदि गुरु आदि गलती के विषय में पूछें तो उनके सामने बात को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत नहीं करना चाहिए, अयथार्थ नहीं बोलना चाहिए। प्रमाद में मन चला जाए तो आदमी को पुनः संभल जाना चाहिए और गलती का प्रायश्चित्त कर लेना चाहिए।

श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति के अध्यक्ष श्री रवि बाबू पोद्दार, सचिव श्री राजकुमार बोथरा और कार्य सचिव श्री विमल दीवान ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में तेरापंथ समाज के प्रतिष्ठित शिवचंदराय डाबड़ीवाल परिवार (श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति के अध्यक्ष श्री रवि बाबू पोद्दार के ससुराल) के तेरापंथ धर्मसंघ के साथ संबंध की चर्चा की। रिसड़ा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने गीत प्रस्तुत किया। श्री संजय नाहर ने आभार व्यक्त किया।

आज रात्रि में अर्हतवन्दना के उपरान्त आचार्यप्रवर रात्रि विश्राम हेतु अपने प्रवास कक्ष के निकट स्थित ऐसे स्थान पर पधारे, जो ऊपर से आच्छादित और चारों ओर से प्रायः खुला हुआ था। पूज्यप्रवर वहां कुछ क्षण आसीन हुए ही थे कि तेज तूफान का दौर शुरू हो गया। काफी समय से आकाश मार्ग में

विहरण कर रहे बादल भी बरसने लगे। देखते ही देखते वर्षा का वेग भी बढ़ गया। तेज तूफान के कारण पानी उस स्थान में वेग के साथ आने लगा। पूज्यप्रवर ने वह स्थान छोड़ने का निर्णय लिया। आचार्यप्रवर पांच-सात कदम दूर स्थित अपने प्रवास कक्ष में पधारे। तीव्र हवा और ठंडी बौछारों ने उतनी से देर में पूज्यप्रवर का मानों अभिषेक कर दिया। वर्षा की तीव्रता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि आचार्यप्रवर सहित कई संतों के वस्त्र इतने गीले हो गए कि उन्हें बदलना पड़ा। काफी देर बरसने के बाद वर्षा क्रमशः मंद होती हुई थम गई।

बड़ा लक्ष्य बनाएं

२ जून। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः हमीरागाछी से सिंगूर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में कुमारकुंडू नामक गांव के लोगों ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीष प्राप्त की। मार्गस्थ एक जैनेतर परिवार के व्यावसायिक प्रतिष्ठान के निकट संबद्ध व्यक्ति ने पूज्यप्रवर को भीतर पधारने की प्रार्थना की। पूज्यप्रवर ने वहां कुछ क्षण आसीन होकर उन्हें मंगलपाठ सुनाया। इन दिनों इस क्षेत्र में उमस प्रायः दिनभर व्याप्त रहती है। साधु-साध्वियां भी इसके अभ्यस्त होते जा रहे हैं। अब शरीर पसीने से तर-बतर न हो तो आश्चर्य हो सकता है। अत्यधिक पसीने का होना सामान्य बात-सी बन गई है। आज भी मौसम ने उमस का रूप धारण कर रखा था। आसमान में बादल छाए हुए थे। लगभग ११.१ किमी का विहार कर पूज्यप्रवर सिंगूर में स्थित श्री बड़ाबाजार लोहापट्टी सेवा समिति द्वारा निर्मित स्थान में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। कोलकाता के बड़ाबाजार में लोहे के व्यवसाय करने वाले लोगों की इस समिति के पदाधिकारियों और अन्य कार्यकर्ताओं ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संसार में दो प्रकार के जीव हैं--सिद्ध और संसारी। सिद्धों के जीवन नहीं होता, संसारी जीव जीवन जीते हैं। ८४ लाख जीव योनियों में मानव जीवन श्रेष्ठ है। आदमी को यह सोचना चाहिए कि मेरे जीवन का लक्ष्य छोटा है या बड़ा? छोटा लक्ष्य छुटपन और बड़ा लक्ष्य बड़प्पन का द्योतक हो सकता है। नास्तिक विचारधारा के अनुसार इस जीवन के बाद कुछ नहीं होता, किन्तु आदमी को इसका अनुसरण नहीं करना चाहिए। आस्तिक विचारधारा के अनुसार इस जीवन के बाद भी कुछ रहता है। मनुष्य को इस विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में अपनी जीवनशैली निर्धारित करनी चाहिए। पूर्वबद्ध कर्मों को क्षीण करने के लिए इस देह को धारण करना चाहिए। हमारी आत्मा पापों से जकड़ी हुई है, कर्मों से बद्ध है। मनुष्य जीवन का उत्तम लक्ष्य है कि पूर्वबद्ध कर्मों का क्षय करना, इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शरीर को धारण करना चाहिए क्योंकि मनुष्य जीवन में ही धर्म की उत्कृष्ट साधना हो सकती है। संयम और तप के द्वारा सर्वकर्मविमुक्त बना जा सकता है।' पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश जमीकंद और रात्रि भोजन के परिहार की भी प्रेरणा प्रदान की।

आचार्यप्रवर ने बालमुनि के कथानक के माध्यम से जनता को धर्माचरण हेतु पावन संबोध प्रदान किया। आचार्यप्रवर के निर्देश पर बालमुनि प्रिंसकुमारजी, मुनि केशीकुमारजी, मुनि नमनकुमारजी, मुनि पार्श्वकुमारजी और मुनि ध्रुवकुमारजी ने अपना-अपना परिचय प्रस्तुत करते हुए जैनागम 'दसवेआलियं' के श्लोकों का पृथक-पृथक उच्चारण तथा 'प्रभु पार्श्वदेव चरणों में' गीत का आंशिक संगान किया। आचार्यप्रवर ने बालमुनियों को कोलकाता चतुर्मास में अच्छा अध्ययन करने की प्रेरणा भी प्रदान की। आचार्यप्रवर के वात्सल्य भाव और बालमुनियों की प्रस्तुति की साक्षी बनकर जनता अभिभूत थी।

श्री बड़ाबाजार लोहापट्टी सेवा समिति के अध्यक्ष श्री विमल टिबड़ेवाल, श्रीमती रेशमी सिंघी और श्रीमती प्रीति सिंघी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी-अपनी प्रस्तुति दी।

श्रीरामपुर में भक्तों के भगवान का पावन पदार्पण

३ जून। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः सिंगूर से श्रीरामपुर के लिए प्रस्थित हुए। मार्ग के परिपार्श्व में टोकरियों में रखे गए गंगासागर प्रजाति के आमों के विषय में बताया गया कि इस प्रजाति की गुणवत्ता आम की दूसरी प्रजातियों से अधिक है। 'चिनमोड़' गांव के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। आज मार्ग में डीडवाना निवासी श्रीरामपुर प्रवासी श्री नेमीचन्द घोड़ावत नामक करीब इठ्यानवें वर्षीय श्रद्धालु ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। बताया गया कि सन् १९५९ में गुरुदेव तुलसी के श्रीरामपुर पदार्पण के वे साक्षी रहे हैं।

पूज्यप्रवर करीब १२.२ किमी का विहार परिसंपन्न कर गणेश स्टील एण्ड ऑलवेज लिमिटेड में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। अपने आराध्य को अपने प्रतिष्ठान में पाकर श्री सज्जन नाहटा तथा श्री महावीर बैद परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

पश्चिम बंगाल में हुगली (गंगा) नदी के तट पर बसे श्रीरामपुर का धार्मिक, शैक्षिणक और औद्योगिक अपना इतिहास है। राम-सीता के मंदिर के नाम पर जाना जाने वाला श्रीरामपुर सन् १७५५-१८४५ तक डेनमार्क के अधीन था और उस समय इसका नाम 'फ्रेडरिक नगर' रहा। उन्होंने बंगाल के नवाब अलीवर्दी खां से इसे (लीज) पट्टे पर लिया था। उन दिनों यहां सिल्क और सूती कपड़े का व्यापार प्राधान्य लिए हुए था। सन् १८०० के आसपास ईसाई मिशनरी के रूप में जोगुआ मार्शमैन, विलियम केरी और विलियम वार्ड का आगमन हुआ। उन्होंने इस क्षेत्र की पहली प्रिटिंग प्रेस की स्थापना की और लगभग ४० देशी-विदेशी लिपियों में बाइबिल, हितोपदेश, रामायण, महाभारत आदि को अनूदित कर प्रकाशित किया। उनके द्वारा सन् १८१८ में स्थापित श्रीरामपुर कॉलेज आज भी ख्याति प्राप्त शैक्षणिक संस्थान के रूप में प्रतिष्ठित है। यह संस्थान थियोलोजी (इसाई धर्म) का विश्वविद्यालय है। कहा जाता है कि भारत की प्रथम जूट मिल भी इसी क्षेत्र में स्थापित हुई थी।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्‌बोधन हुए।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी में आत्मानुशासन रहे तो वह दुःख मुक्ति की दिशा में बढ़ सकता है। अपने पर अपना अनुशासन आत्मानुशासन होता है। आत्मानुशासन के लिए शरीरानुशासन, वचोनुशासन, मनोनुशासन और इन्द्रियानुशासन की अपेक्षा होती है। आदमी को यथासंभव शारीरिक चंचलता को नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिए। शरीर पर अनुशासन कर आत्मानुशासन किया जा सकता है। आदमी का अपनी वाणी पर भी अनुशासन रहना चाहिए। वाणी इष्ट, मिष्ट और शिष्ट होनी चाहिए। वाणी का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। जो वाणी की साधना कर लेता है, वह विशिष्ट व्यक्ति बन जाता है। वचोनुशासन के बिना यथार्थ की साधना कठिन हो सकती है। वाणी पर अनुशासन कर आत्मानुशासन किया जा सकता है। आत्मानुशासन के लिए मनोनुशासन भी अपेक्षित होता है। मन पर अनुशासन कर आत्मानुशासन किया जा सकता है। शरीरानुशासन और वचोनुशासन मनोनुशासन से जुड़े हुए हैं। इन दोनों के बिना मनोनुशासन कैसे हो सकता है। आत्मानुशासन के लिए इन्द्रियों पर भी अनुशासन आवश्यक है। श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसन और स्पर्शन--इन पांचों इन्द्रियों

पर आदमी का अनुशासन रहना चाहिए। शरीरानुशासन, वचोनुशासन, मनोनुशासन और इन्द्रियानुशासन से आत्मानुशासन को परिपुष्ट बनाएं, यह अभिलषणीय है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'अर्हत्वन्दना में आर्षवाणी का--सुंदर संकलन किया गया है और साथ में एक गीत भी है। पहले आर्षवाणी और फिर भक्तिपूर्ण गीत--दोनों का सुंदर योग है। अर्हतवन्दना का अनुष्ठान अर्थ बोध अनुभूति के साथ किया जाए तो वह एक सुंदर निर्जरा का भी साधन है और अध्यात्म के सम्मुख होने का एक उपाय है। यह अवश्य ध्यातव्य है कि अर्हत वन्दना कितनी जागरूकता से की जाती है अथवा ढर्रे के रूप में उसे चलाया जाता है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि उपस्थिति अनिवार्य है, इसलिए आते हैं, बैठ जाते हैं, पूरा हुआ और चले जाते हैं। यदि ऐसा है तो कुछ अकाम निर्जरा वाली बात हो सकती है। जैन साधना पद्धति में निर्जरा के दो प्रकार बताए गए-सकाम निर्जरा और अकाम निर्जरा। जहां मोक्ष की इच्छा नहीं, तमन्ना नहीं और कुछ धार्मिक अनुष्ठान करना पड़ता है तो वह अकाम निर्जरा का कार्य हो सकता है। अर्हतवन्दना सकाम निर्जरा का साधन बना रहे, यह काम्य है।'

श्री महावीरलाल बैद, श्री सज्जन नाहटा, श्री प्रमोद घोड़ावत व श्री राजेन्द्र बैद ने आचार्यप्रवर के चरणों में अपने श्रद्धासिक्त भावसुमन अर्पित किए। बैद-नाहटा परिवार की ओर से बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। श्री ललित बोरड़ और श्री नवीन नौलखा ने मधुर गीत के द्वारा आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना की।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/-स्व. श्रीमती यशोदादेवी कोचर की पुण्यस्मृति में हुलासमल, प्रवीणकुमार, प्रफुल्लकुमार, प्रमोदकुमार, आदि, भूमि, अदिती कोचर परिवार, लामटा, बालाघार (मध्यप्रदेश) द्वारा प्रदत्त।

२१००-स्व. श्री धनराजजी धारीवाल (रतनगढ़) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी उमरावदेवी धारीवाल (कोलकाता) द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व. श्री नथमलजी सेठिया (सरदारशहर-अहमदाबाद) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती इचूदेवी सुपुत्र व पुत्रवधू स्व. अमरचन्द-मंजू, स्व. सज्जन-चित्रा, श्याम-नीलम, सुपौत्र व पौत्रवधू स्व. दीपेश-शीतल, गौरव-मयूरी, अंकित-श्वेता प्रपौत्री जियाना व प्रपौत्र अंश सेठिया द्वारा प्रदत्त।

२१००/-चि. संदीप सह नेहा के शुभ विवाहोपलक्ष्य में लूणचंद, महावीर, मोतीलाल, हीरालाल सुराणा गुडियातम, वेल्लूर, बगडीनगर द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ फोन नं-७३८४४३६५६०, ०७३८४४३६५६२
दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ६३१०२३४६४१

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी